Vol 7 Issue 3 Dec 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017

शिवानी के कथा साहित्य का मूल्यांकन

गीता रानी
पी.एच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), द्रविड़ियन विश्वविद्यालय, कुप्पम आन्ध्रप्रदेश

सारांशः–

प्रत्येक साहित्यकार अपनी रचनाओं में अपने युग और समाज का प्रतिबिम्ब चित्रित करता है। समाज की उपेक्षा करके कोई भी साहित्यकार पाठकों की दृष्टि में खरा नहीं उतर सकता। कविवर पंत, निराला, हिमांशु जोशी, मनोहर श्याम जोशी, शेखर जोशी सभी अग्रगण्य साहित्यकार रहे है। लेकिन शिवानी इन सब में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। लगभग पांच दशकों तक निरन्तर साहित्य साधना में लीन कहानी कार शिवानी की एक लघु रचना ''मैं मुर्गा हूं'' 1951 में धर्म युग में छपी थी। इसके बाद आई उनकी कहानी ''लाल हवेली'' और तब से जो लेखन क्रम शुरू हुआ उनके जीवन के अन्तिम दिनों तक अनवरत चलता रहा। लेकिन शिवानी के उपन्यासों और कहानियों ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया। इसका कारण कहीं मेरे मन के किसी अज्ञात कौने में दबा–छिपा पर्वतीय पर्यावरण के प्रति आकर्षण था। शिवानी के साहित्य में मुझे सदा कुछ–न–कुछ नयापन मिलता चला गया। शिवानी के साहित्य का कोष विपुल है। अनेकानेक बड़े उपन्यास, लघुउपन्यास, कहानी संग्रह, संस्मरण निबन्ध इत्यादि उनकी लेखनी से चित्रित हुए है। शिवानी उन कुछेक अर्धसाहित्यिक साहित्यकारों की कोटि की लेखिका नहीं है, जिन्हें आलोचक आसानी से उड़ा दिया करते है। वे समृद्ध कथानक, सूक्ष्म संवेदना और जीवन्त परिवेश की लेखिका है।

प्रस्तावनाः

व्यक्तित्व एवं कृतित्व :–

शिवानी का वास्तविक नाम श्रीमती गौरा पन्त था। इनका जन्म 17 अक्तूबर सन 1923 ई0 की प्रभात–वेला में राजकोट, सौराष्ट्र, में हुआ। इनके पिता श्री अश्विनी कुमार पांडे राजकोट के राजकुमार कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त थे। आपके पितामह काशी विश्व विद्यालय में धर्म प्रचारक के पद पर आसीन थे। वे कुमाँऊ के पहले स्नातक थे। संस्कृत भाषा के धुरन्धर विद्वान एवं एक दबंग वकील के रूप में उनकी ख्याति थी। पं0 मदन मोहन मालवीय उनके पितामह के अन्तरंग मित्रों में से थे। पिता की ऊँची नौकरी से वे प्रसन्न नहीं थे।

जिस वृक्ष की छाया तले जिन पांच छात्राओं को लेकर इनके नाना ने एक विद्यालय का शुभारम्भ किया, उनमें से एक, शिवानी की माता, लीलावती भी थी। लीलावती बाल्यकाल से ही पढ़ने–लिखने में कुशल थी। वे एक सुसंस्कृत, साहित्यिक अभिरूचि की महिला थी। उन्होंने पति के साथ अनेक प्रान्तों में रहकर विभिन्न भाषाओं का ज्ञान अर्जित कर लिया था। वे एक सुशिक्षित एवं विदुषी नारी थी। पुस्तकों से उन्हें अगाध प्रेम था। जहां कोई नई पुस्तकें देखती, खरीदकर अपनी लाईब्रेरी में सहेज लेती। उनके घर में हिन्दी, गुजराती एवं संस्कृत पुस्तकों का एक समृद्ध पुस्तकालय था।

शिवानी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ जहां प्रत्येक व्यक्ति पढ़ने का शौकीन था। बिना पढ़े कोई भी रात को सो नहीं सकता था। शिवानी को बड़ी बहन जयन्ती तथा भाई त्रिभुवन के साथ शान्ति निकेतन भेज दिया गया। शान्तिनिकेतन में शिवानी को कतिपय साहित्यकार, कलाकार तथा लेखक मिले, जिनकी प्रतिभा ने शिवानी को अत्याधिक प्रभावित किया। गुरूदेव के सान्निध्य ने उनकी प्रतिभा को जीवंत बनाया। सत्यजीत रे उनके सहपाठी थे। डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान तथा बलराज साहनी जैसे कलाकार उनके शिक्षक रहे।

उपन्यास तथा कहानी में कथा वस्तु का महत्वपूर्ण स्थान है। यह उपन्यास की रीढ़ होती है। इसी के आधार पर विभिन्न घटनाओं का विस्तार तथा मुख्य कथा के साथ गौण कथाओं का विकास होता है। यह स्पष्ट है की सामाजिक उपन्यासों की कथा समाज से गृहीत होती है। उपन्यास कार सामाजिक जीवन और उसकी गतिविधियों को लेकर विभिन्न सांस्कृतिक प्रवृतियों को रूपायित करता है स्थानीय वातावरण के माध्यम से सामाजिक अनुभव को गहराई से व्यंजित करने के लिये मानव जीवन की विभिन्न गतिविधियों को श्रृंखला बद्ध कर कथानक का रूप दे दिया जाता है कथानक निर्माण में वातावरण मुख्य भूमिका निभाता है। शिवानी के उपन्यासों का समग्रतात्विक विवेचन कर उनके मूल्याकंन का प्रयास है।

कथावस्तु :–

शिवानी की कहानियों में यथासंभव नारी संवेदना को दर्शाया है जो कि समय असमय परिवार के प्रति समर्पित रही है। ''दो स्मृति चिन्ह'' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने नारी की संवेदना की भावना को दर्शाया है।

बिन्दु की आँखों में नींद नहीं थी। उसने बड़ी ललक से, गहरी नींद में डूबे अपने पति को निहारा। नींद में उसका चेहरा किसी निर्दोष भोले बालक का–सा लग रहा था। बालों का एक फुग्गा हवा में उड़–उड़कर चेहरे पर झुका आ रहा था। धीरे–से बिन्दु ने गुच्छे को सहलाकर पीछे किया तो देवेश जग गया।

''अमाँ, सोने दो, यार!'' कहकर फिर करवट लेकर सो गया। बिन्दु को हँसी आ गई। कैसी नींद है, बाप रे बाप! उसकी तो आँख ही नहीं लगी थी। लगती भी कैसे।

पात्र योजना :–

शिवानी के कथा साहित्य में पात्रों का दायरा उच्च, मध्य और निम्न वर्गीय परिवारों का प्रतिनिधित्व करता है इसलिये वे सभी इसी समाज के, हमारे आस–पास के जाने–पहंचाने चेहरे लगते है।

कहानीकार शिवानी ने अपनी कहानियों के पात्रों का चयन विषय को ध्यान में रखकर किया है। इनकी कहानियों के पात्र अपने व्यक्तित्व को उजागर करने में पूरी तरह से सक्षम है। उदाहरण स्वरूप –

निम्मी की सगाई के दिन ही हम दोनों ने पहली बार उसके भावी दूल्हे को देखा था। निम्मी के पिता ने अपने असंख्य विदेशी मित्रों को उस दिन न्यौता दिया, सुनहरे अक्षरों में छपे कार्ड में पूरा कार्यक्रम छपा था। रामपुर से एक सुन्दरी बाई जी को इसी जलसे के लिए मोटी रकम देकर बुलाया गया, कान पर हाथ धरकर टप्पे अलापती बाईजी, एक बार गावतकिया लगाए दुर्गादतजी की ओर भी घातक कटाक्ष का वार कर बैठी थी और उन्होंने नाक पर रूमाल रखकर आंखे बन्द कर ली थी। अपने अरसिक श्वसुर के प्रति उसका काव्य–निवेदन व्यर्थ जाते देख, निम्मी ने मुंह में आंचल ठूंस लिया था। गोल कमरे की सज्जा ही उस दिन निराली थी। मेज पर विराट केक, नाना प्रकार के मेवे –मिष्ठान, छत से लटकते झाड़फानूस की जगमगाती रोशनी में चमकते विदेशी जोड़े, होंठो का रंग, आलपा के गाउन की खसर–खसर, मीठी खुशबू, सभ्य ठहाके शैम्पेन की चौड़ी कटि की बोतलों में डूबती–उतराती सुनहली–रूपहलीं गोलियाँ।

संवाद योजना :–

पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप या संवाद को कथोपकथन कहा जाता है। संवाद योजना कहानी का महत्वपूर्ण तत्व है। कथानक के विकास और चरित्र विशलेषण दोनों ही दृष्टियों से कथोपकथन का विशेष महत्व होता है। प्रभावशाली कथोपकथन ही कहानी को रोमांचक, सजीव तथा स्वाभाविक रूप प्रदान करता है। कहानी में नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने के लिए संवाद सहायक होते हैं। इन्हीं कारणों से कहानी में आयोजित नाटक जैसी विशेषता और स्वाभाविकता अपने आप विराजती है। कहानी ''के से'' ओ शेखर, बस दस मिनट निकालकर आई हूं। भूख के मारे आंते कुलबुला रही हैं।'' वह जोर से एक कुर्सी पर धम्म से बैठ गई और उसने ऐसा प्रश्न पूछा जो प्रायः पति अपनी पत्नी से पूछता है, 'क्या क्या है खाने में आज।''

सब तुम्हारी पसंद का है 'के': अरहर की दाल, भुर्ता, खड़े मसाले का सालन और रायता।''

''चावल! चावल नहीं बनवाया, शेखर।''

अपनी मांसल बाहुओं का त्रिकोण बनाकर 'के' ने नन्हीं मुंहलगी बालिका की भांति अपने गप्पू से गाल फुला लिए।

''तुम डॉक्टरनी होकर भी भूल जाती हो 'के': चावल तुम्हारे लिए जहर है, इन्सुलिन लिया या नहीं।

'के' ने कोई उत्तर नहीं दिया।

भाषा शैली :–

भाषा की दृष्टि से शिवानी की कहानियों के अध्ययन के पश्चात हम देखते हैं कि कहानीकार ने अपनी कहानियों में आंचलिक शब्दावली का भी भरपूर प्रयोग किया है। जो कि इनका सराहनीय प्रयास है क्योंकि भाषा ही अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन है। शिवानी ने अपनी कहानियों में तद्भव शब्दावली का खूब प्रयोग किया है ''तर्पण'' नामक कहानी में शिवानी ने संस्कृत के शब्दों का भी अच्छा प्रयोग किया है।

वक्रता तथा लक्षण व्यंजन इनकी भाषा शैली को और भी उत्कृष्ट बना देते हैं। इनकी शब्द योजना अपने लक्ष्य को भेदने की क्षमता में सक्षम है। व्यंग्य विनोद और समाज के विषय पर तीखा शब्द प्रहार इनकी रचनाओं की विशेषता कही जा सकती है। उदाहरण –

''वाह––वाह, सासू ज्यू, तभी तो हमारी लाल बेगम को उठाकर मुंह में धरने को मन करता है!'' बड़े जीजा जी एक

आंख मींचकर बालिका इन्दुली की ओर दोनों बाहें फैला देते। फिर तो वह भूतनी उन्हें नोच खसोट कर ही रख देती।

वातावरण :–

शिवानी ने कहानियों में मूल रूप से पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश को केन्द्रित किया है। राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि से जुड़े अनेक पहलुओं को अवलम्बित करके वातावरण–सृष्टि–योजना को क्रियांन्वित किया है। यथार्थवादी विचारधारा के कारण कथाकार शिवानी ने आडम्बरहीन परिवेश को प्रस्तुत करने में परहेज नहीं किया। कहीं ग्रामीण परिवेश आकर्षण का केन्द्र बनते हैं तो कहीं विद्यालयी वातावरण पाठक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। शिक्षा केन्द्रों में पनपती कामुकता प्रदूषित वातावरण को जन्म देती है। क्योंकि शिवानी का प्रकृति प्रेम उन्मुक्त रूप से झलकता है जो कि हम उनकी कई कहानियों में भी देख चुके है। शिवानी ने सामाजिक कुरीतियों को अपनी कहानियों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाया। उनकी कहानियों से ''तर्पण'', जोकर, माणिक, स्वयंसिद्धा, उपहार, शायद आदि इसके महत्वपूर्ण उदाहरण है। शिवानी की कहानियां आमजन, पर अपना प्रभाव छोड़ने में पूर्ण रूप से सक्षम रही है।

उद्देश्य :–

शिवानी का कथा साहित्य जनमानस की अभिव्यक्ति है साहित्यकार ने समाज के प्रति अपने दायित्वों को निभाकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति की है। राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि पृष्ठ भूमि में व्यापत परिवारों में आधुनिक भाव बोध को केन्द्रित करके कहानियों की रचना की गई है। अनीति की अतिशयता से पनपती अव्यवस्था के प्रति लेखिका का झुकाव रहा है। प्रगतिशील चेतना से युक्त कहानीकार की मनोवृति का विवेचन हुआ है यथार्थ बोध एवं युग बोध की झलक इनके कथा साहित्य में देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. शिवानी : विप्रलब्धा ''दो स्मृति चिन्ह'' पृ0सं0 –7
2. शिवानी : विप्रलब्धा ''दो स्मृति चिन्ह'' पृ0सं0 – 26–27
3. शिवानी : विप्रलब्धा ''के'' पृ0सं0 –102
4. शिवानी : चिरस्वयंवरा ''दो संखिया'' पृ0सं0 – 12
5. शिवानी : ''उपहार'' पृ0सं0 –9

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com